o. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 39
सृष्टि संवत् 1960853116
27 दिसम्बर 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 39, 24/27 दिसम्बर 2015 तदनुसार 12 पौष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

महान् ने महान् जहान बनाया

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणाऽधि दाने व्यवनीरधारयः।
यश्चासमा अजनो दिद्युतो दिव उरुमूर्वा अभितः सास्युक्थ्यः॥
—ऋ० २/१३/७

शब्दार्थ—यः= जिसने **धर्मणा**=अपनी धारकशक्ति से **पुष्पिणीः** = फूलवाली **च**= तथा **प्रस्वः** = उत्तम फलों वाली **च**= भी **अवनीः** = भूमियाँ **दाने** = देने के निमित्त **अधि+वि+अधारयः** = अधिकारपूर्वक विशेषरूप से बनाई हैं **च** = और **यः** = जिस **उरुः** = महान् ने **दिवः** = द्यौः, आदिम प्रकाशमय पिण्ड, हिरण्यगर्भ से **असमाः** = विषम, अनुपम। **विद्युतः** = चमकने वाले **ऊर्वान्** = महान्-से-महान् जहानों को **अभितः** = सब ओर **अजनः** = बनाया है, **सः** = ऐसा तू **उक्थ्यः** = प्रशंसनीय **असि** = है।

व्याख्या—प्रश्न होता है- किसी की स्तुति-प्रार्थना उपासना क्यों करें ? सबके मन में उठने वाले इस प्रश्न का इस मन्त्र में समाधान-सा है। संसार में कार्यकारण का अबाध्य नियम कार्य करता दीख रहा है। छोटी-सी सूई को भी कर्त्ता के बिना बना हुआ मानने को कोई तैयार नहीं होता, किन्तु इस संसार के लिए उसे किसी कर्त्ता की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। वेद अपनी भावुक, मोहक शैली से समझाता हुआ कहता है—देख, भोले मनुष्य ! देख ! सावधानता से देख ! इस रङ्ग-बिरङ्गी भूमि को देख ! कहीं बेल-बूटे हैं। कहीं फूलों की क्यारियाँ लगी हैं, कहीं फलदार वृक्ष झूम रहे हैं। इन सबको किसने बनाया ? खेत में किसान ने लगाया, किन्तु वन में किसने सजाया ? किसान ने भी वन देखकर ही खेत बनाया था। फिर देख, इस भूमि को भी तो कोई धारण कर रहा है। वन, पर्वत सभी भूमि पर हैं, किन्तु भूमि किस पर है ? भूमि को कौन धार रहा है ?

अच्छा और देख, आकाश की ओर दृष्टि डाल। ये जो झिलमिल करते तारे-सितारे, ग्रह-नक्षत्र दीख रहे हैं, इन्हें किसने उत्पन्न किया । कोई बड़ा है, कोई छोटा है। ज्योतिषी बतलाते हैं, ये झिलमिला करने वाले तारे इतने छोटे नहीं हैं जितने दीखते हैं। इनमें कोई-कोई तो इतना बड़ा है जिसमें पचास लाख सूर्य समा जाएँ। सूर्य भी छोटा नहीं है। वही खोजी कहते हैं, हमारी इस विशाल ससागरा धरा-जैसी तेरह लाख भूमियाँ सूर्य में समा सकती हैं। अरे ! इतने विशाल तेजः पुञ्जों को किसने उत्पन्न किया ? जिसने इतने महान् दीप्तिमान् पिण्ड बनाये, वह अवश्य महान् है। कारण-कार्य के नियम का अपलाप नहीं किया जा सकता। कर्त्ता के बिना संसार में कोई वस्तु बनती नहीं तो इतने महान् पदार्थों का बनाने वाला अवश्य होना चाहिए। इतने महान् पदार्थों को बनाने तथा पालने के लिए अवश्य महती शक्ति चाहिए, अतः शक्ति की कामना वाले उसकी पूजा करें, अर्चा करें। वेद कहता है—'सास्युक्थ्य' = वही तू पूज्य है। उसने सभी ओर रचना की है, अर्थात् सभी ओर वह है। जिधर चाहो उधर ही उसे पाओ।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

वर्ष 2016 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2016 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

अभिनिवेश

-ले० श्री अभिमन्युकुमार खुल्लर, से.नि. वरिष्ठ लेखाधिकारी
(केन्द्र) 22 नगरनिगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर

विद्वान लोग जीवात्मा के लिये पांच क्लेश (दु:ख) बताते हैं। अविद्या, अस्मिता, राग-द्वेष और अभि निवेश। यहां हम पूर्व के चार दु:खों की चर्चा नहीं करेंगे क्योंकि इनमें ही उलझकर मानव का सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हो जाता है और जब जीवन का संध्याकाल-वार्धक्य (बुढ़ापा) आता है तब मौत खड़ी दिखाई देती है और वह मरना नहीं चाहता। सब छूटने की कल्पना से ही वह भयग्रस्त हो जाता है। प्रसिद्ध गायक श्री के.एल. सहगल का वह लोकप्रिय गाना याद आ गया-

''बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाय
.........अपना, बेगाना सब छूटो जाय''

यह भी अच्छा ही है कि यह क्लेश यौवन समाप्ति के पश्चात् ही होता है अन्यथा जीवन का उत्साह, कार्य करने की क्षमता और रसोभोग करने का स्वाद ही फीका पड़ जाय। महाराज भृतहरि को भी जीवन के उत्तरार्ध में ही ज्ञान प्राप्त हुआ था। इसीलिये उन्होंने श्रृंगार-शतक पहले लिखा और वैराग्य-शतक बाद में। अनेक बार वह-श्रृंगार और वैराग्य के झूले में झूलते रहे। अस्तु,

स्वतंत्र सत्ता आत्मा को परमात्मा ने पंचभूत (छिति, जल, पावक, गगन, समीरा) पदार्थों से निर्मित कर जीवात्मा का स्वरूप प्रदान कर दिया। आत्मा को देह का कलेवर परमात्मा ने प्रदान किया है। सृष्टि रचना के निर्धारित क्रम से परमात्मा जीवात्मा को कैसे अलग कर सकता है ? सृष्टि में किसी भी पदार्थ के रचना क्रम को देखिए। बीज अंकुरित होकर, पौधा बनता है। यौवन काल में उसमें फूल खिलते है फिर निर्धारित अवधि में समाप्त हो जाता है। फल वाले वृक्षों में जीवन के निर्धारित समय तक फल फूल आते हैं और फिर वह पंच तत्वों में विलीन हो जाते है। ईश्वर ने यही हाल इस देह का भी किया है। सम्पूर्ण रचना से पृथक इस देहधारी मनुष्य को बुद्धि, विवेक दिया है। वह अविद्या (अज्ञान), अस्मिता (आत्मश्लाघा, अहंकार, मोह) राग (अनुराग, मोह, सांसारिक सुखों की अभिलाषा, ईर्ष्या, द्वेष) द्वेष (शत्रुता, वैर, विरोध) के चक्कर में इस तरह पड़ जाता है कि विवेक को एक तरफ रख कर देह को ही सत्य समझता है और उसको सुरक्षित रखने में सम्पूर्ण शक्ति लगा देता है। अन्त में होता वही है जो विधि रचि राखा। मृत्यु का आलिंगन करना ही पड़ता है।

यक्ष और युधिष्ठिर संवाद महाभारत में अपना विशिष्ठि स्थान रखता है। संदर्भित प्रसंग में एक ही संवाद उपयोगी है। यक्ष ने पूछा-संसार का सबसे बड़ा सत्य क्या है ? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया-भगवन। संसार का सबसे बड़ा सत्य यही है कि मानव नित्य अन्य मानवों को मरते हुए देखता है और वह सोचता है कि वह मरेगा, वह मरेगा, मैं नहीं मरूंगा।

शाक्य मुनि गौतम बुद्ध प्रवचन कर रहे थे। एक मां अपने शिशु के शव को छाती से चिपकाए, रोती-बिलखती सभा में पहुँच गई। बुद्ध के चरणों में नतमस्तक होकर बोली-आप यशस्वी पुण्यात्मा, भगवान है। मेरे शिशु को जीवित कर दीजिए। मेरी यही एक मात्र सन्तान है। बुद्ध समझ गए कि किसी भी प्रकार के ज्ञान का उपदेश सुनने लायक उसका मन नहीं है। बुद्ध ने उससे कहा-मां, निराश मत हो। मैं तेरा पुत्र जीवित कर दूंगा। मां का रूदन रूक गया। आशा ने आंसू सुखा दिए। बुद्ध ने आगे कहा-मेरी एक ही शर्त है। तू यह कटोरा लेकर घर-गांव जा और उस घर से यह कटोरा तेल लेकर आ, जिस घर में किसी की मृत्यु न हुई हो। वह मां कटोरा लिए घर-घर पहुँची। एक घर भी ऐसा नहीं मिला कि जिसमें किसी की मृत्यु न हुई हो। भूखी-प्यासी, बेकल-बेसुध, संध्याकाल बुद्ध के पास पहुँची। बुद्ध ने पूछा-तेल ले आई। मां ने निराशा में हाथ फैला दिए। कहा एक भी घर ऐसा नहीं मिला जहाँ किसी की मृत्यु न हुई हो। बुद्ध ने अब उपदेश दिया-जन्म सत्य है और मृत्यु अंतिम सत्य। मां को ठंडक मिली। ज्ञान प्राप्त हुआ।

एक माह भीषण पीड़ा सहकर भी, मृत्यु से संघर्ष करते हुए, महर्षि दयानन्द के मुख से ऐसा कोई शब्द नहीं निकला जो समीपस्थ उपस्थित लोगों को यह एहसास दिला सके कि अभिनिवेश क्लेश महर्षि को स्पर्श भी कर सका हो। विपरीत इसके वह समस्त आगन्तुकों को सिरहाने की ओर, पीछे आने का संकेत कर प्रभु-उपासना में निमग्न हो जाते है। अंतिम श्वास छोड़ने से पूर्व कहते हैं-ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की। किस दमदारी से ऋषि आत्मा परमात्मा को उलाहना देती है।

महर्षि दयानन्द के अभिनिवेश क्लेश से मुक्त होने का कारण ढूंढना चाहिए। ईश्वर के स्वरूप का निश्चय हो जाने पर कोई अन्यथा विचार उनके मन में कभी नहीं आया। निराकार ईश्वर पर विश्वास का आधार उसकी सृष्टि रचना ही था जिसका उन्होंने गहनतम एवं अत्यन्त सूक्ष्मता से निरीक्षण परीक्षण कर लिया था। इस समस्त सृष्टि की रचना ईश्वर ने पंचभूतों से की है। उस रचना का क्रम उत्पत्ति, संवर्धन और अन्त में पंचभूतों में लय-विलीन हो जाना है। जब सृष्टि के समस्त चेतन जगत की यही गति है, तो मानव इस गति से कैसे पृथक रह सकता है, बच सकता है। महर्षि के लिये यह ज्ञान बौद्धिक कसरत नहीं था बल्कि आत्मसात किया हुआ सर्वोच्च सत्ता का अनिवार्य सत्य था। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उस समय भी मिलता है जब महर्षि ने ईसाईमत की बखिया उधेड़ने में अत्यन्त कठोर शब्दों का प्रयोग किया था। कहा था-ये लोग ईसामसीह को कुंवारी कन्या का पुत्र मानते हैं और लज्जा भी नहीं करते। सभा में अनेक उच्च पदस्थ अंग्रेज अधिकारी उपस्थित थे। महर्षि को अप्रत्यक्ष चेतावनी देते हुए, कहलवाया गया कि अंग्रेज सभ्य जाति है इसलिये कठोर आलोचना सह सकते है अन्य मत वाले नहीं सहेंगे। उनके जीवन के लिये आसन्न खतरा हो सकता है।

महर्षि ने दूसरे दिन भाषण सिंह गर्जना से ही किया। लोग कहते हैं कि सत्यभाषण न करूं। कलक्टर नाराज हो जावेगा। गवर्नर पीड़ा देगा। इस शरीर का क्या ? कोई भी इसे समाप्त कर सकता है। पर वह व्यक्ति बताओ जो मेरी आत्मा का हनन कर सके। अभिनिवेश क्लेश से पीड़ित कोई व्यक्ति यह सिंह गर्जना कर सकता है ? नहीं, कदापि नहीं। मन महर्षि की ओर चुम्बकीय शक्ति से जुड़ा है इसलिये उदाहरण भी उनके ही स्मरण हो आते है।

विश्व के अन्य राष्ट्रों में, सभ्यताओं में मृत्यु पर चिन्तन हुआ है कि नहीं, मुझे अधिक ज्ञात नहीं है परन्तु भारत के ऋषि-मुनियों ने इस पर गम्भीर चिन्तन किया है। भारतीय मनीषा ने लाखों वर्ष के आध्यात्मिक जीवन के कारण इस दु:ख को आत्मसात कर लिया है। सामान्य जन तक यह जानता है, मानता है कि यह दु:ख-

देह धरे को दण्ड है, सब काहू को होय।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख भुगते रोय।।
नौ द्वारे का पींजरा, तामें पंछी मौन।
रहे अचम्भा जानिए, गए अचम्भा कौन।।
हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ
एक पक्ष यह भी है-
लाई हयात आए, कज़ा ले चली चले।
न अपनी खुशी आए, न अपनी खुशी चले।।

ऋषियों ने हमें जीने का ढंग सिखाया है और मरने का भी। ईश्वर ने सृष्टि के समस्त सुख मानव उपभोग के लिये दिए है। साथ ही यह भी कहा-तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा-त्याग भाव से भोगो-तुम्हारा इन पर जीवनकाल में ही अधिकार है। मैं तुम्हें इनमें से कुछ भी नहीं ले जाने दूंगा। मृत्युंजय मंत्र में मृत्यु की भयानकता नहीं बताई गई है। सुकर्म करते पूर्ण आयु-सौ वर्ष भोगों। पकी हुई आयु के अनुभव नई पीढ़ी को देते जाओ। इस प्रकार जीवन जीते हुए जाओगे तो पके हुए खरबूजे की तरह सुगन्ध फैलाते हुए जाओगे। जीवन का पूर्ण सुख मिलेगा और अभिनिवेश क्लेश भी न होगा। ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना को सफल करोगे।

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला बस्ती दानिशमन्दा जालन्धर शहर का 36 वां वार्षिक उत्सव 27 दिसम्बर 2015 से 03 जनवरी 2016 रविवार तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर पं. विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रवचन तथा श्री जगत वर्मा जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मधुर भजन होंगे। प्रात: 5:30 से 7:00 बजे तक प्रभात फेरी निकाली जाएगी। रात्रिकालीन सत्संग 8:00 बजे से 9:30 बजे तक होगा। रविवार का कार्यक्रम प्रात: 10:00 बजे से 2:00 बजे तक चलेगा। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन किया जाएगा। आप सभी धर्मप्रेमियों से निवेदन है कि इस उत्सव में शामिल होकर उत्सव की शोभा को बढ़ाएं। -यशपाल प्रधान आर्य समाज

सम्पादकीय......

महिलाओं के उद्धार में आर्य समाज का योगदान

सृष्टि के आरम्भ में ही परमपिता परमात्मा ने अपने संसार को चलाने के लिए नारी एवं पुरूष का निर्माण किया था। यह दोनों संसार रूपी गाड़ी अथवा गृहस्थ के दो पहिए हैं। दोनों में से एक के भी खराब होने पर गाड़ी चल नहीं सकती है। अत: दोनों के सहयोग से समाज आगे बढ़ सकता है। अत: इस विश्व को श्रेष्ठ बनाने के लिए आवश्यकता है, एक सशक्त सुन्दर एवं पवित्र समाज जिससे उत्तम राष्ट्र बनता है और राष्ट्र से विश्व को उत्तम बनाने की कल्पना की जा सकती है। एक उत्तम समाज व्यक्तियों के समूह से ही बनना सम्भव है। ऐसे व्यक्ति जो सुसंस्कारित, चरित्रवान, धार्मिक तथा पवित्र हों। ऐसे व्यक्तियों का निर्माण माता, पिता और आचार्य करते हैं। सन्तान को प्रथम संस्कार एवं शिक्षा देने वाली माँ ही होती है। इसलिए माता को निर्माता कहा गया है और वह माँ एक नारी ही है। सन्तान के निर्माण में उसकी मुख्य भूमिका माँ ही बनाती है। अत: नारी को सुशिक्षिता, विदुषी, धार्मिक, सचरित्रा होना अनिवार्य है तभी वह सुयोग्य नागरिक का निर्माण कर सकेगी। माँ के गर्भ में ही सन्तान को संस्कार मिलना आरम्भ होता है।

प्राचीन काल में वैदिक पद्धति के अनुसार नारियाँ भी विदुषी और वीरांगनाएं होती थी। वेद ज्ञान तथा शास्त्रों के ज्ञान से युक्त होती थी। कई नारियां इसी से ही ऋषिकाएं बनी हैं जिन्होंने वेद मन्त्रों का साक्षात्कार किया। किन्तु कुछ स्वार्थी लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण नारियों को शिक्षा से मध्ययुग में वंचित कर दिया जिस कारण विश्व में अज्ञानरूपी अन्धकार छा गया। क्योंकि जब नारी सुशिक्षित होती है तो पूरा परिवार सुशिक्षित हो जाता है। अत: नारी को जब वेद आदि ज्ञान से वंचित कर दिया गया तो समाज में अज्ञानता एवं अन्धविश्वास फैल गया। क्योंकि जब माँ को ही ज्ञान नहीं है तो सन्तान का निर्माण कैसे हो सकता है। नारी के अशिक्षित होने के कारण समाज की बहुत बड़ी हानि हो रही थी। स्त्री शूद्रो नाधीयतामिति श्रुते:- नारी और शूद्र न पढ़े यह श्रुति है। ऐसा कहकर स्त्रियों को वेद ज्ञान से वंचित कर दिया गया। ऐसी विषम परिस्थिति में युगपुरूष वेद उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समाज, राष्ट्र एवं विश्व को पतन से बचाने के लिए पुन: प्रयत्न किया। इन्होंने नारी जाति के प्रति अन्याय और पक्षपात का डट कर विरोध किया। वेदों को समक्ष रखकर दुनिया को जबाव दिया कि नारी को वेद पढ़ने, ज्ञानी बनने और यज्ञ करने का पूर्ण अधिकार है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में यजुर्वेद के 26वें अध्याय का दूसरा मन्त्र प्रस्तुत करते हुए समाज को बताया कि नारी भी पुरूष की तरह वेदों का अध्ययन कर सकती है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:
ब्रह्मराजन्यभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चरणाय।।

इस प्रकार अन्धविश्वासियों और स्वार्थियों को सही मार्ग दिखलाया है। कन्या पाठशाला को पृथक रूप से खोलने का प्रचार किया। बाल विवाह को रोकने का पूरा प्रयत्न किया जिससे समाज को बहुत हानि होती थी। अत: उन्होंने वेद का प्रमाण प्रस्तुत किया-

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।

बचपन से ही ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए पूर्ण विद्या को प्राप्त करके युवती स्त्री अपने योग्य युवा पति को वरण करे। स्त्रियों को भी पुरूषों की तरह ब्रह्मचर्य का पालन करना तथा यज्ञोपवीत धारण करने का विधान है। इस कार्य को आगे बढ़ाते हुए महर्षि दयानन्द के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। उसके पश्चात अन्य कई गुरूकुलों की स्थापना भारत में हुई जिससे महिला जगत् को प्रकाश मिला। शस्त्र और शास्त्र दोनों की शिक्षा ग्रहण करके सभी महिलाएं आगे बढ़ी हैं और महिलाओं का कल्याण हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी देश में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव तथा भारतीय संस्कृति के प्रति विमुखता को देखकर अत्यन्त दु:खी हुए। एक दिन उन्होंने अपने घर में अपनी छोटी सी बेटी जो ईसाईयों के स्कूल में पढ़ती थी उसके मुख से गाते हुए सुना-

ईसा-ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा तेरा राम रमैया ईसा तेरा कृष्ण कन्हैया।।

बेटी के इस गीत को सुन करके वे बहुत आहत हुए। वे ईश्वर के सच्चे स्वरूप को वेद के माध्यम से ज़ानते थे। आर्य समाज का दूसरा नियम उनके मस्तिष्क में विद्यमान था। वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए तथा महिला जगत के उद्धार के लिए आर्य समाज के सिपाही ने जालन्धर में वैदिक कन्या पाठशाला की स्थापना की जो आज महाविद्यालय का रूप धारण कर चुका है। नारी जगत् इसको भुला नहीं सकता। नारियों को ऊंचा उठाने में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। अन्यथा नारी को पैर की जुती और नरक का द्वार माना जाता था। महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति के इस वाक्य को पुन: दोहराया-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।

जहां नारियों का आदर होता है वहीं परिवार सभा और राष्ट्र में सुख शान्ति और स्मृद्धि का वास होता है। क्योंकि वेद का संदेश भी यही है:

अहंकेतुरहमुर्द्धाऽहमुग्ता विवाचनी

आज भी आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए नारी जाति के उद्धार के लिए प्रयत्नशील है। सभी क्षेत्रों में नारी के सुशिक्षित होने से चरित्रवान सन्तान, आदर्श समाज का निर्माण हो सकता है और राष्ट्र की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। **-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री**

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर एवं महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला दोनों संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में शुद्धि आन्दोलन के ध्वजवाहक अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जालन्धर आर्य समाज अड्डा होशियारपुर में दिनांक 27 दिसम्बर 2015 दिन रविवार को प्रात: 8:30 से 12:30 बजे तक मनाया जा रहा है। कार्यक्रम का आरम्भ यज्ञ के द्वारा होगा। यज्ञ के पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का कार्यक्रम आरम्भ होगा। आप सभी से अनुरोध है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाएं। **-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज**

वेद प्रचार दिवस

आर्य समाज गऊशाला रोड़ फगवाड़ा के तत्वाधान में 27 दिसम्बर 2015 दिन रविवार को सुबह 8:30 बजे से 10:30 बजे तक आर्य मॉडल सी. सै. स्कूल गऊशाला रोड़ फगवाड़ा के प्रांगण में स्व. मास्टर मनोहर लाल चोपड़ा जी की मधुर स्मृति में वेद प्रचार दिवस का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें आर्य समाज के विद्वान् सन्यासी, प्रचारक एवं भजनोपदेशक डा. स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी मथुरा वाले वेदों में यज्ञ की महिमा एवं जीवन दर्शन विषय पर मार्गदर्शन देंगे। कृपया कार्यक्रम में शामिल होकर पुण्य के भागी बनें।

-डा. यश चोपड़ा महासचिव आर्य समाज

मुम्बई में आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संरक्षण में आर्य वीर दल मुम्बई ने "आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर" का आयोजन रविवार दिनांक 15 से रविवार दिनांक 22 नवंबर 2015 तक आर्य समाज सान्ताक्रुज में उत्साहवर्द्धक किया गया। यज्ञ के उपरान्त शिविर का उद्घाटन एवं ध्वजारोहण शिविराध्यक्षा श्रीमती यशबाला गुप्ता एवं महिला आर्य समाज सान्ताक्रुज की संयोजिका श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री के करकमलों से हुआ। इस शिविर की मुख्य शिक्षिका सुश्री सुव्रती आर्या देहरादून गुरुकुल एवं ज्योति आर्या बागवत मेरठ थी। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए कन्याओं का उत्साहवर्द्धन किया।

"आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर" के अन्तर्गत शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक उन्नति के लिए आर्य वीर दल मुम्बई के अनेकों विदुषी महिलाओं को आमन्त्रित करके विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन दिया यथा-उत्तम विद्यार्थी बनाना, स्मरण शक्ति बढ़ाना, व्यक्तित्व विकास, आत्मविश्वास पैदा करना, तनाव से मुक्ति, योग प्राणायाम, ध्यान, आसन, स्वस्थ निरोग रहने के प्रभावी सूत्रों पर तथा सैद्धान्तिक, सारगर्भित एवं प्रभावोत्पादक विचारों से शिविरार्थियों को लाभान्वित किया गया। जिसमें श्रीमती रमा आर्य, श्रीमती निर्मला पारधि, श्रीमती उर्मिल बहल, श्रीमती संचिता आर्या एवं श्रीमती भावना मलिक ने भाग लिया।

स्वामी दयानन्द के चार विलुप्त ग्रन्थ

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

स्वामी दयानन्द ने सन् 1863 में मथुरा में प्रज्ञाचक्षु दण्डी गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से विद्यार्जन पूरा कर अज्ञान के नाश व विद्या की वृद्धि सहित असत्य व अज्ञान पर आधारित धार्मिक, सामाजिक व राजधर्म सम्बन्धी मान्यताओं का खण्डन और सत्य पर आधारित मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार व मण्डन किया था। वह उपदेश, प्रवचन वा व्याख्यानों द्वारा प्रचार के साथ अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों से वार्तालाप व शास्त्रार्थ भी करते थे। उन्होंने उन लोगों तक अपने सिद्धान्तों के प्रचार के लिए जो उनके उपदेशों में सम्मिलित नहीं हो सकते थे, अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। ग्रन्थों का प्रणयन व प्रकाशन का एक कारण यह भी था, उनके जीवनान्त के बाद भी लोग उनके सत्य मन्तव्यों, विचारों सहित वैदिक सिद्धान्तों से लाभ उठा सकें। उनका साहित्य आज भी न केवल वैदिक मत के उनके अनुयायियों का मार्गदर्शन कर रहा है अपितु इससे अनेक गवेषक, शोधार्थी व अन्य मत के लोग भी लाभान्वित हुए हैं व हो रहे हैं। स्वामी जी ने बड़ी संख्या में ग्रन्थ लिखें हैं जिनमें प्रमुख हैं सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय आदि। इस लेख में हम उनके कुछ लघु ग्रन्थों की चर्चा कर रहे हैं जो उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन के आरम्भिक काल में लिखे थे, उनका प्रकाशन भी हुआ था तथापि वह सुरक्षित नहीं रखे जा सके और सम्प्रति लुप्त व अनुपलब्ध हैं।

स्वामीजी के ज्ञात ग्रन्थों में चार लघु ग्रन्थ ऐसे हैं जो विलुप्त हुए हैं। यह ग्रन्थ हैं, सन्ध्या, भागवत-खण्डन, अद्वैतमत-खण्डन तथा गर्धभतापिनी-उपनिषद। सन्ध्या स्वामी दयानन्द जी द्वारा रचित ग्रन्थों में प्रथम पुस्तक है। इसकी रचना की भूमिका इस प्रकार है कि स्वामी दयानन्द जी लगभग तीन वर्ष (1860-1863) मथुरा में दण्डी श्री स्वामी विरजानन्द सरस्वती से विद्याध्ययन करके सन् 1863 में आगरा पधारे। यहां लगभग डेढ़ वर्ष तक निवास किया। यहां पर स्वामी जी ने सर्वप्रथम 'सन्ध्या' की एक पुस्तक लिखी। इसे आगरे के महाशय रूपलाल जी ने छपवाकर प्रकाशित किया। इसके विषय में स्वामी दयानन्द जी के जीवनी लेखक पं. लेखराम जी द्वारा संगृहीत प्रमुख जीवनचरित्र में लिखा है कि स्वामी जी के उपदेश से एक सन्ध्या की पुस्तक, जिस के अन्त में लक्ष्मी-सूक्त था, छपवाई गयी और एक आने में बेची गई।

समस्त नगर के लोगों ने बिना किसी पक्षपात के उन पुस्तकों को मोल लिया। कुछ पण्डितों ने इतना आक्षेप किया कि इसमें विनियोग नहीं रखे गये, परन्तु सब ने ली और बाल-बच्चों को पढ़ाई। छपाई आदि का रुपया रूपलाल ने दिया। तीस हजार के लगभग इस की कापी छपी थी और डेढ़ हजार रुपया व्यय हुआ था। यह तीन वर्णों के लिए थी। आर्यसमाज के एक अन्य विद्वान् पं. महेशप्रसाद जी ने 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है कि 'श्री स्वामी जी ने संवत् 1920 वि. (सन् 1863 ई.) में सबसे पहिले संध्या की पुस्तक आगरे में लिखी थी। वहीं के एक सज्जन महाशय रूपलाल जी ने डेढ़ सहस्र रुपया व्यय करके इसकी तीस सहस्र प्रतियां छपवाई थी और मुफ्त बांटी गई थी।' यह पुस्तक स्वामी दयानन्द की सर्वप्रथम कृति है। स्वामी जी महाराज-ईश्वर-भक्ति पर विशेष बल देते थे, अतएव उन्होंने अपने जीवन-काल में सन्ध्या की कई पुस्तकें प्रकाशित कीं। उनके द्वारा लिखित एक अन्य पुस्तक पंचमहायज्ञ विधि है जिसमें सन्ध्या व इसकी विधि को विस्तार से व प्रमाणों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। यही सन्ध्या आजकल आर्यसमाजों व आर्यसमाजियों द्वारा देश व विश्व भर में प्रयोग में लाई जाती है।

सन्ध्या की यह पुस्तक आगरे के 'ज्वालाप्रकाश प्रेस' में छपी थी। इसका आकार व प्रकार अज्ञात है। 'भागवत-खण्डन' स्वामी जी का ऐसा लघु ग्रन्थ है जो सन् 1866 में प्रकाशित किया गया। आर्यजगत के प्रख्यात विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक इस विषय में लिखते हैं कि श्री स्वामी जी महाराज ने संवत् 1923 के आरम्भ में भागवत-खण्डनम् नाम दूसरी पुस्तक लिखी थी। 'भागवत' के दो पुराण है। एक 'श्रीमद्भागवत' (वैष्णवों का) और दूसरा 'देवीभागवत'।

यह भागवत-खण्डन 'श्रीमद्भागवत' नामक पुराण के खण्डन में लिखा गया था। 'श्रीमद्भागवत' वैष्णव संप्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ है। अतः भागवत-खण्डन का दूसरा नाम 'वैष्णवमतखण्डन' भी है। श्री पं. लेखराम जी ने ऋषि दयानन्द के जीवनचरित्र में इसका उल्लेख 'भड़वाभागवत' और 'पाखण्ड-खण्डन' नाम से किया है। पं. लेखराम जी द्वारा संकलित जीवनचरित के हिन्दी संस्करण में पुस्तक का परिचय उपलब्ध होता है। उन्होंने लिखा है कि 'पाखण्ड-खण्डन (सात: पृष्ठ की यह पुस्तक संस्कृत भाषा में स्वामीजी ने भागवत-खण्डन विषय पर लिखी। सं. 1921 व 1922 में जब वे दूसरी बार आगरा में रहे उसी समय का लिखा गया यह पुस्तक मालूम होता है। सबसे पुरानी हस्तलिखित प्रति इसकी ज्येष्ठ द्वितीय 9 बृहस्पतिवार 1923 तदनुसार 7 जून सन् 1866 की लिखी हुई पं. छगनलालजी शास्त्री किशनगढ़ के पास विद्यमान है। अजमेर से वापस लौटकर सं. 1923 के अन्त में आगरे में 'ज्वालाप्रकाश प्रेस' में पण्डित ज्वालाप्रसाद भार्गव के प्रबन्ध में इसकी कई हजार प्रतियां छपवायीं और 1 बैशाख सं. 1924 तदनुसार 12 अप्रैल सन् 1867 के मेला हरिद्वार पर इसे बिना मूल्य वितरण किया। यह अत्यन्त सुन्दर और समयोचित ट्रैक्ट (पुस्तिका) उच्चकोटि की शुद्ध और ललित संस्कृत में है। यह पुनः प्रकाशित नहीं हुआ।'

महर्षि दयानन्द के एक अन्य जीवनी लेखक पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी ने भी भागवत-खण्डन के विषय में लिखा है।

उन्होंने एक विशेष बात यह लिखी है कि इस पुस्तक की प्रतियां आगरा में बांटी गई और शेष हरिद्वार में बांटने के अभिप्राय से साथ ले गये और इन्हें कुम्भ के मेले में वहां बांटा गया। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने पुस्तक विषयक एक महत्वपूर्ण बात यह लिखी है कि जिस काल में यह लघु पुस्तिका लिखी गई, उस समय राजपूताना तथा उत्तर भारत में श्रीमद्भागवत की कथा का बहुत प्रचलन था, अतः सबसे प्रथम इसी पुराण के खण्डन में यह पुस्तक छपवाई गई। यह भी लिख दिया कि सम्प्रति यह पुस्तक उपलब्ध है जिसका श्रेय पं. मीमांसक जी को ही है। यह पुस्तक पं. मीमांसक जी को काशी में सन् 1962 में तब उपलब्ध हुई जब वह वहां रामलालकपूर ट्रस्ट के पुस्तकालय में पुरानी पुस्तकों को टटोल रहे थे। वहां दैवयोग से अनायास उनकी दृष्टि ''पाषंडि मुखमर्दना पुस्तक पर पड़ी जो इन्द्रप्रस्थ निवासी श्री विश्वेश्वरनाथ गोस्वामी नाम के एक पण्डित जी की लिखी हुई थी और इसका प्रकाशन मुरादाबाद के सुदर्शन यन्त्रालय में हुआ था। 62 पृष्ठों की इस पुस्तक में लेखक ने ऋषि दयानन्द विरचित 'भागवत-खण्डन' को अक्षरशः उद्धत करके उसका खण्डन किया है। इस प्रकार यह पुस्तक सुरक्षित उपलब्ध हो गई जिसे पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने हिन्दी अनुवाद सहित रामलालकपूर ट्रस्ट से प्रकाशित कर दिया और अब यह उपलब्ध है व इन पंक्तियों के लेखक के पास भी है।

स्वामी दयानन्द जी लिखित एक अन्य विलुप्त पुस्तक 'अद्वैतमत-खण्डन' है जिसे उन्होंने काशी में ज्येष्ठ सं. 1927 अर्थात् जून, 1870 में लिखा था। यह पुस्तक सम्प्रति अनुपलब्ध वा विलुप्त है। पं. लेखराम जी संगृहीत स्वामी दयानन्द के जीवन चरित में इस लघुग्रन्थ का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि 'यह ट्रैक्ट (लघु पुस्तिका) स्वामी जी ने काशी में शास्त्रार्थ सं. 2 (अर्थात् काशी शास्त्रार्थ) के पश्चात् छपवाया और यन्त्र करके 'कविवचन-सुधा' नामक हिन्दी के मासिक पत्र में संस्कृत भाषा में भाषानुवाद सहित मुद्रित कराया।' सन्दर्भः कविवचनसुधा जिल्द 1 संख्या 14-15 13 जून सन् 1870। यह लाइट प्रेस बनारस में गोपीनाथ पाठक के प्रबन्ध से प्रकाशित हुआ।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान (23 दिसम्बर 1926 ई.)

-ले० पंडित उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक, गढ़ निवास मोहकमपुर (देहरादून)

(गतांक से आगे)

प्रात: सायं और मध्याह एक-एक बार सब ब्रह्मचारियों के कमरे में जाकर ब्रह्मचारी को देख लिया करते थे और केवल उनके चेहरों को देखकर ही पहचान लेते थे कि किसी में ब्रह्मचर्य सम्बन्धी कोई दोष तो नहीं है। किसी को कभी निराश और हतोत्साह नहीं करते थे। वह अपने बच्चों के समान सब ब्रह्मचारियों को समझते थे। ब्रह्मचारी अपने आचार्य महात्मा जी को एक ही व्यक्ति में अपना मातृत्व और पितृत्व माने हुए थे। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा भारत में एक नई जागृति, नई चेतना का उद्‌गम हो रहा था। समझदार शिक्षा शास्त्री विदेशी और स्वदेशी सभी इस शिक्षा प्रणाली की प्रशंसा करते थे। प्राय: सभी विदेशों का महानुभाव, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मूर्त रूप देखने आते रहे और यह निश्चय करके जाते रहे कि वे भी अपने देश में इसी शिक्षा प्रणाली को चलाएंगे।

महात्मा जी ने 1917 के गुरुकुलोत्सव से कुछ दिन पूर्व सन्यास ग्रहण करने का निश्चय कर लिया और 10 अप्रैल 1917 के दिन सन्यास ग्रहण कर लिया। बड़ी प्रसन्नता का वह दिन था जब उन्होंने सन्यास ग्रहण किया और अपने जीवन का कार्य बहुत अधिक विस्तृत कर दिया। इस कर्मक्षेत्र में अब वह आदर्श कर्मयोगी नेता के रूप में भारत के सामने उपस्थित हुए। उन्होंने लिखा है कि संसार के नेताओं को चाहिए कि मन, वचन और कर्म द्वारा अपने आदर्श उस जनसमुदाय को सुधारें। यदि नेताओं का जीवन अपने उदाहरण से दूसरों के मन, वचन और कर्म का पालन नहीं करवा सकता हो तो अपने किए हुए कर्मों के प्रायश्चित लिए उसे एकान्त में बैठ जाना चाहिए।

उन्होंने हिन्दू संगठन आन्दोलन आरम्भ कर दिया। जिसमें चार भागों पर बल दिया गया। 1. जो लोग, अज्ञान, स्वार्थ व प्रलोभन वश आर्य (हिन्दू) धर्म का त्याग करके अन्य मतावलम्बी हो गए हैं उनकी शुद्धि संस्कार के द्वारा करके पुन: आर्य हिन्दू धर्म और समाज में मिला देना चाहिए।

इस कार्य के लिए स्वामी जी ने फरवरी 1923 में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की आगरा में स्थापना की और मलकाना, राजपूत आदि नव मुस्लिम दो लाख से अधिक मुसलमान शुद्ध किए गए।

2. प्राचीन आश्रम प्रणाली का पुनरुद्धार किया जाए। 25 और 16 वर्ष की आयु से पूर्व किसी युवक और कन्या का विवाह न हो।

3. बाल विधवाओं को विवाह की अनुमति निसंकोच दी जाए और उन्हें शास्त्रीय व्यवस्थानुसार कन्या ही समझा जाए।

4. प्राचीन आर्यों की वर्णाश्रम पद्धति का पुनरुद्धार किया जाए। हजारों जाति उपजातियों को मिटा दिया जाए। तथाकथित अस्पृश्य व दलित वर्ग को चार वर्णों में सम्मिलित कर दिया जाए। गुण कर्म, स्वभाव द्वारा ही किसी भी हिन्दू का वर्ण निश्चय किया जाए। इस प्रकार से नष्ट होती हुई हिन्दू जाति बच सकती है।

सन् 1925 में ईद के अवसर पर देहली निवासियों को सम्बोधन करते हुए कहा कि जितना तुम सहन करोगे और मुसलमान भाईयों को प्रेम का मार्ग दिखलाओगे उतना ही भगवान तुम पर कृपा करेंगे।

स्वामी जी का ईश्वर पर अटल विश्वास व श्रद्धा थी। इसी कारण उन्होंने अपना नाम श्रद्धानन्द रखा था। ईश्वर पर विश्वास और श्रद्धा के कारण ही वे बड़ी से बड़ी आपत्ति आने पर भी कभी विचलित नहीं हुए।

श्रद्धेय स्वामी जी की निर्भयता इस उदाहरण से और भी अधिक प्रगट होती है कि मार्च सन् को दिल्ली में आपके नेतृत्व में सार्वजनिक सभाएं हुई। जलूस निकाला गया और गोरखों की संगीनों के आगे आपने अपनी छाती खोलकर निर्भयतापूर्वक कहा-लो मैं खड़ा हूं, गोली मारो।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में उन दिनों दिल्ली में सचमुच रामराज्य रहा। शहर में एक भी ताला नहीं लगा। एक भी मार पीट नहीं हुई। एक भी जेब नहीं कतरी गई, और तो क्या जुएखाने और शराबखाने भी बन्द रहे। सब ने देवियों को मां, बहिन और बेटी समझकर उनका आदर किया। इस रामराज्य में सरकार की पुलिस व सेना की कहीं छाया तक देखने में न आती थी, शहर का सब प्रबन्ध जनता के अपने हाथों में था।

4. अप्रैल के दिन दोपहर के बाद की नमाज के पीछे जामा मस्जिद में मुसलमानों का एक विशाल जलसा हो रहा था उसमें मौलाना अब्दुल्ला चूडीवाले ने आवाज देकर कहा स्वामी श्रद्धानन्द जी की तकरीर भी होनी चाहिये। दो तीन जोशीले नौजवान उठे और तांगे पर जाकर नये बाजार से स्वामी जी को लिवा लाये। अल्लाह अकबर के नारों के साथ स्वामी जी मस्जिद की वेदि पर आरूढ़ हुए। शायद यह भारत के ही नहीं इस्लाम के इतिहास में पहला अवसर था कि एक हिन्दू व्यक्ति ने जामा मस्जिद की वेदि पर से वाज किया। स्वामी जी ने ऋग्वेद के एक मन्त्र से अपना व्याख्यान आरम्भ किया और ओ३म् शांति शांति के साथ समाप्त किया। 6 अप्रैल को फतेहपुरी के मस्जिद में भी स्वामी जी का भाषण हुआ।

1919 के अन्त में अमृतसर में कांग्रेस का जो अधिवेशन हुआ उसने देश की राजनीति में युग परिर्वतन कर दिया था। उसके स्वागताध्यक्ष और सभापति क्रमश: युवाकाल के पुराने साथी स्वामी श्रदानन्द जी और पं मोतीलाल नेहरू नियुक्त हुए थे। स्वामी जी पर वहां के प्रबन्ध का भार डाला गया। दिसम्बर का महीना था। आकाश में बादल घिर गये थे। ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। दूर देशों के प्रतिनिधि मुसीबतों मे पड़ गये थे। सर्दी से बचने के लिए उन्हें धर्मशालाओं और पक्के मकानों में ठहराया गया था तो भी सर्दी से परेशान थे।

हिन्दू मुसलमानों के मेल ने असहयोग आन्दोलन को आसाधरण बल प्रदान कर दिया। इसके कारण भी महात्मा गांधी जी का देश की राजनीति पर पूर्ण अधिकार हो गया।

8 दिसम्बर 1926 को एक बार फिर गुरूकुल आये। गुरूकुल पहुंचते ही प्रात: तेज ठंडी लगने से उन्हें बुखार हो गया और सायंकाल लौटने पर जब डाक्टर अन्सारी की चिकित्सा आरम्भ हुई। चार दिन के लिए डॉ. अन्सारी को रामपुर जाना पड़ा लौटते ही उन्होंने रोगी को फिर सम्भाल लिया। उनको आश्वासन दिलाया जाता था कि आप उठ खड़े होंगे। परन्तु स्वामी जी ने स्पष्ट कहा कि अन्दर से यह आवाज नहीं उठती है। स्वामी जी ने सभा के मन्त्री स्वामी चिंतानन्द जी को बतलाया कि अब तो यही इच्छा है कि दूसरा शरीर धारण कर शुदि के अधूरे काम को पूरा करूं।

23 दिसम्बर सन् 1926 को मध्यान्ह पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति प्रतिदिन की भांति श्रद्धेय स्वामी जी के दर्शन करने गए तो उन्होंने स्वामी जी को सोये हुए पाया। पास के कमरे में स्वामी जी के मन्त्री पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार सोए हुए थे। स्वामी जी की चारपाई के पास दरी पर उनके सेवक धर्म सिंह जी गाढ़ निद्रा में सोये पड़े थे। स्वामी जी की निद्रा में बाधा टालना उचित न समझकर श्री पं० इन्द्रजीत सायंकाल दर्शन करने का विचार करके वापिस घर चले गये और किसी स्वयं सेवक को कमरे में बैठा गए। लगभग ढाई बजे डा० सुखदेव आदि कुछ सज्जन स्वामी जी दर्शनार्थ आये। साढ़े तीन बजे स्वामी जी ने सबको विदा किया। सेवक धर्मसिंह ने कमीड लाकर दिया और शौचादि से निवृत्त होकर स्वामी जी मसनद के सहारे सावधान होकर बैठ गए। इतने में सेवक धर्मसिंह ने सीढ़ियों में किसी युवक को आते हुए देखा। उसने उसे रोकना चाहा। पर युवक ने स्वामी जी के दर्शन का आग्रह किया। स्वामी जी ने आवाज सुनकर कहां कौन है? अन्दर आने दो। अब्दुलरसीद नामक उस मुस्लिम युवक ने जो एक साधारण जिल्दसाज था आते ही स्वामी जी से कहा कि मैं आपसे इस्लाम के मुतल्लिक कुछ गुफतगु करना चाहता हूं। स्वामी जी ने कहा भाई। मैं बीमार हूं। तुम्हारी दुआ से राजी हो जाऊंगा, तो बातचीत करूंगा।

इतने में उसने पानी मांगा। स्वामी जी ने धर्मसिंह को पानी लाने को कहा। ज्यों ही धर्मसिहं पानी लाने के लिए बाहर की तरफ गया। उस दुष्ट ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर पिस्तौल से तीन गोलियां चला दी। सच्चे सेवक धर्मसिह ने उसका सामना किया तो उसकी टांग पर गोली चला दी, जिससे वह जमीन पर लेट गया। हत्यारा भागने की चेष्टा में ही था कि स्वामी जी के मन्त्री पं धर्मपाल जी ने आकर उसको दबा लिया। एक हाथ रिवाल्वर वाले हाथ पर और दूसरा उस पर रखे हुए उसको आध घण्टे दबाये रखा। इन तीनों गोलियों ने स्वामी जी का तो शरीरान्त कर दिया था अन्त समय में उन्होंने ओ३म् का स्मरण किया और साथ हैं ऐसे मतान्धों की सद्‌बुदि के लिए भी भगवान से प्रार्थना की।

इस प्रकार गुरूकुल शिक्षावली के समुद्धारक, आदर्श सुधारक, आदर्श आचार्य, कर्मयोगी नेता, दीनों दलितों के परम उद्धारक, सच्चे ईश्वर भक्त, श्रद्धामूर्ति आर्य जाति के हदय सम्राट् सन्यासी का अमर बलिदान 23 दिसम्बर 1926 ई० को सायं: 4 बजे के लगभग हुआ। वस्तुत वीर सन्यासी के योग्य यही अवसान था।

आदर्श पुरुष

-ले० श्री महात्मा चैतन्यमुनि, सुन्दरनगर

वेदों में मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए अनेकश: ऐसे स्वर्णित सूत्र दिए गए है जिनका अनुकरण करने से व्यक्ति अपने जीवन को महान से सुमहान बना सकता है। ऋग्वेद के पांचवें मण्डल के सैंतालीसवें सूक्त में ऐसे बहुत से सूत्र दिए गए हैं जिनका अनुकरण करके व्यक्ति आर्य अर्थात् श्रेष्ठ एवं देव तथा आदर्श पुरूष बन सकता है। इस सूक्त के तीसरे मन्त्र में कहा गया है-

उक्षा समुद्रो अरूष: सुपर्ण: पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश।

मध्ये दिवो निहित: पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ।। (ऋ०5-47-3)

हे मानव यदि तू जीवन में देव अर्थात् एक आदर्श व्यक्ति बनना चाहता है तो तू (उक्षा) अर्थात् अपने शरीर में शक्ति संचय कर क्योंकि शरीर ही उन्नति का मूल कारण है। हमें अपने इस शरीर की कभी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए बल्कि इसे निरन्तर परिपुष्ट बनाए रखना चाहिए क्योंकि वास्तव में हमारे सभी लौकिक तथा पारलौकिक क्रियाकलाप इस शरीर के बिना नहीं चल सकते हैं। जो व्यक्ति अपने शरीर की उपेक्षा करता है या इसे रोगी बनाता है वह परमात्मा की दृष्टि में भी अपराधी है क्योंकि उसने परमात्मा द्वारा प्रदत्त इस दुर्लभ शरीर की सुरक्षा नहीं की। हमारा खान-पान एवं आचार-व्यवहार ऐसा हो जिससे हमारा शरीर निरन्तर परिपुष्ट बना रहे। नियमित दिनचर्या के द्वारा हम अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। हमें इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि हमें क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए। यदि हम अपने आहार एवं व्यवहार पर सूक्ष्मता से चिन्तन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे तो निश्चित् रूप से हम दीर्घायु को प्राप्त कर सकते है बल्कि केवल दीर्घायु प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि दीर्घायु तक हम बोलते रहें, सुनते रहें, देखते रहें, अपने कार्य स्वयं करने की सामर्थ्य बनी रहे यह भी आवश्यक है। निरन्तर प्राणायाम, व्यायाम तथा योगाभ्यास आदि द्वारा अपने शरीर को सदा स्वस्थ रखना चाहिए....

मन्त्र में आगे कहा गया-(समुद्र:) जो अपने भीतर ज्ञान का समुद्र सृजित करता है वह देवता बन जाता है तथा उसका जीवन दूसरों के लिए भी अनुकरणीय बन जाता है। ज्ञान का अर्जन करने वाला व्यक्ति एक आदर्श व्यक्ति बन जाता है। वह स्वयं के भीतर ही आनन्दमयी वृत्ति का सृजन कर लेता है। व्यक्ति को अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाते रहना चाहिए। ज्ञान को बढ़ाना तो है ही मगर उस ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को बनाते भी चले जाना आवश्यक है अन्यथा वह ज्ञान भी अनावश्यक बोझ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। व्यक्ति को निरन्तर जीवन में स्वाध्यायशील बने रहना चाहिए अर्थात् निरन्तर आर्ष ग्रन्थों को पढ़ते रहना चाहिए और तदवत् अपना जीवन बनाते चले जाना चाहिए। इससे व्यक्ति का व्यक्तित्व एक आदर्श व्यक्तित्व बन जाएगा। आगे कहा गया है-(अरूष:) व्यक्ति को कभी क्रोधित नहीं होना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति को हम किसी प्रकार से भी आदर्श व्यक्ति नहीं कह सकते हैं। देव वह है, आर्य वह है, आदर्श पुरूष वह है जो कभी क्रोधित नहीं होता है। धर्म के दस लक्षणों में भी मनु महाराज ने एक लक्षण अक्रोध को रखा है। हमें भी आदर्श व्यक्ति बनने के लिए क्रोध रूपी चाण्डाल से सदा ही बचकर रहना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति दूसरों का तो विनाश करता ही है मगर उससे पूर्व वह अपना ही विनाशकर बैठता है। क्रोधी व्यक्ति अपने विवेक को खो देता है और जब व्यक्ति का विवेक ही समाप्त हो जाए तो वह क्या-क्या पापकर्म नहीं कर बैठेगा....

आदर्श व्यक्ति वह है जो-(सुपर्ण:) अर्थात् अपने जीवन को उत्तमता के साथ आगे ले जाता हुआ उसे पूर्णता प्रदान करता है। मानव जीवन का लक्ष्य है विवेकी होकर जीवन में लौकिक एवं पारलौकिक सम्पदाओं को प्राप्त करना। इसके लिए धर्म और सत्य के मार्ग पर चलते हुए उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए उसे सदा ही वेद मार्ग का अनुकरण करना चाहिए। वेद के सिद्धान्त की व्यक्ति की चतुर्दिक उन्नति का आधार है। स्वयं को वेद-ज्ञान के अनुसार चलाकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करनी चाहिए। अपने आप को सद्गुणों से सजाते-संवारते रहना चाहिए। आगे कहा गया-(पूर्वस्य पितु: योनिं आविवेश) आदर्श व्यक्ति वह है जो परमपिता (सर्वमुख्य पिता) के गृह में प्रवेश करने वाला अर्थात् ब्रह्म में निवास करने वाला होता है। हमें प्रभु उपासना को प्रमुखता प्रदान करके अपने जीवन को साधानामय बनाना चाहिए। महर्षि दयानन्दजी ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा है मगर ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका ग्रन्थ में वे एक स्थान पर लिखते हैं कि वेद का मुख्य विषय ईश्वर अर्थात् ईश्वर प्राप्ति है। आदर्श व्यक्ति के जीवन का मुख्य लक्ष्य भी ईश्वर प्राप्ति ही होता है, ...वेद में आदर्श व्यक्ति का एक और गुण बताया है-(दिव: मध्ये निहित:) जो सदा ही ज्ञान के प्रकाश के मध्य रहता है अर्थात् प्रतिक्षण ज्ञान प्राप्ति में लगा रहता है.......ज्ञान ही व्यक्ति के उत्थान का आधार है इसलिए हमें वेदादि शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय करते हुए अपने ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए और उस ज्ञान के अनुसार अपने जीवन को चलाना चाहिए। ज्ञान से ही व्यक्ति को विवेक प्राप्त होता है और विवेक होने पर ही उसे धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, विद्या-अविद्या आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

आदर्श व्यक्ति के लिए आगे कहा गया है कि (पृश्नि:) जहां वह ज्ञानज्योति से संस्पृष्ट रहता है वहीं पर (अश्मा) उसका शरीर पत्थर के समान दृढ़ होता है और (विक्रमे) आदर्श व्यक्ति विशिष्ट गति वाला होता है, विक्रम कार्यों को करने वाला होता है। आदर्श व्यक्ति जीवन में कठिन से कठिन कार्य को भी साहस और परिश्रम के साथ करने में सक्षम होता है। वह किसी भी विकट परिस्थिति में अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होता है। मन्त्र में एक और महत्त्वपूर्ण बात कही गई है कि आदर्श व्यक्ति (रजस: अन्तौ पाति) रजोगुण के सिरों को बचाता है अर्थात् वह न ही तामसिक होता है और न ही केवल सात्विक बल्कि वह नपी-तुली क्रियाएँ करने वाला होता है। वह किसी भी क्षेत्र में अतिवादी नहीं होता है बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सदा ही एक सन्तुलन बनाए रखता है। वह प्रत्येक व्यक्ति या परिस्थिति के साथ सदा ही यथायोग्य व्यवहार करने वाला होकर अपनी प्रतिभा का परिचय देने वाला होता है...

पृष्ठ 4 का शेष-स्वामी दयानन्द.....

यह ट्रैक्ट नवीन-वेदान्त के दुर्ग को तोड़ने के लिये सैनिक बल से अधिक बलवान है। इस पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित नहीं हुआ। यह पुस्तक भी विगत लगभग 140 वर्षों से अनुपलब्ध स्वामी दयानन्द जी का चैथा विलुप्त ग्रन्थ है 'गर्दभतापिनी-उपनिषद्।' इसका उल्लेख कर पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी ने लिखा है कि श्री स्वामीजी महाराज के जीवनचरित्र से विदित होता है कि उनका मुखारविन्द सदा प्रसन्न रहा करता था। वे अपने भाषणों से कभी-कभी श्रोताओं का मनोरंजन कराया करते थे। श्रोताओं के मनोरंजन के लिये उन्होंने ''रामतापिनी, गोपालतापिनी आदि उपनिषदों के सदृश एक ''गर्दभतापिनी-उपनिषद् बनाई थी और कभी-कभी उसके वचन सुनाकर श्रोताओं का मनोरंजन किया करते थे। इस उपनिषद् का उल्लेख पं. देवेन्द्रनाथ संगृहीत जीवनचरित्र (भाग 1. पृष्ठ 279) में इस प्रकार किया है-''श्री स्वामी जी ने रामतापिनी और गोपालतापिनी उपनिषदों की तरह गर्दभतापनी उपनिषद् भी बना रखी थी, जिसमें से कभी-कभी वचनों को उद्धृत करके सुनाया करते थे। मीमांसक जी इस पर टिप्पणी कर कहते हैं कि 'यह वर्णन प्रयाग का है। इस बार श्री स्वामी जी महाराज द्वितीय आषाढ़ वदी 2 सं. 1931 को प्रयाग पधारे थे।

अत: यह पुस्तक प्रयाग जाने से पूर्व ही रची गई होगी। दु:ख है कि इसकी कोई प्रतिलिपि सुरक्षित नहीं रखी गई, महर्षि दयानन्द के साहित्य के प्रेमी जब भी उनके साहित्य का अध्ययन करते हैं तो इन तीन ग्रन्थों की उपलब्धता न होने से उनको पीड़ा होती है। यह बता दें कि महर्षि दयानन्द की प्रथम पुस्तक 'सन्ध्या' की प्रति अडयार के राजकीय पुस्तकालय में है। वहां से श्री आदित्यपाल सिंह आर्य ने इसकी प्रति प्राप्त की थी। वह वर्षों तक उनके पास पड़ी रही। हमने उनसे प्राप्त करने का प्रयास किया तो जानकारी मिली कि वह पुस्तक उनसे उनके मित्र श्री पंडित उपेन्द्र राव ले गये थे। अब उनका देहान्त हो गया है अत: वह मिल न सकी। हमने भी अडयार स्थित पुस्तकालय को लिखा था परन्तु हमें वहां से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। अकोला के श्री राहुल आर्य इसकी प्राप्ति के लिए प्रयासरत है। महर्षि दयानन्द के इन विलुप्त हुए ग्रन्थों से यह शिक्षा मिलती है कि पुस्तकों के संरक्षण में कोताही नहीं करनी चाहिये।

शोक समाचार

अत्यन्त दुःखपूर्वक सूचितत करना पड़ रहा है कि आर्य समाज फाजिलका के संरक्षक डा. सुशील वर्मा जी की धर्मपत्नी एवं सुबोध वर्मा भा. ज. पा. मण्डल महासचिव की पूज्या माता श्रीमती पुष्पा वर्मा 6 दिसम्बर 2015 को दिवंगत हो गई। वह काफी समय से अस्वस्थ चल रही थीं। उनका अन्तिम संस्कार 7 दिसम्बर को 11 बजे शमशान भूमि में पूर्ण वैदिक रीति से मन्त्रोच्चारण के साथ किया गया। जिसे धर्म शिक्षक एवं आर्य समाज पुरोहित पंडित प्रेमनारायण विद्यार्थी ने सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारी, सदस्यागण, पंजाब सरकार के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सुरजीत कुमार ज्याणी, भा. ज. पा. एवं कैमिस्ट एसोसिएशन के पदाधिकारी, सदस्यगण एवं शहर के गणमान्य जन उपस्थित रहे। सभी ने दिवंगत आत्मा को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सदगति की कामना की। शोकाकुल परिवार के प्रति सभी ने संवेदना एवं सहानुभूति प्रकट की। पूज्या माता जी, अपने पीछे पुत्र-पुत्रवधू, पुत्रियां, पौत्र तथा दौहित्र, दौहित्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गई हैं। इस आदर्शमय परिवार के निर्माण में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय बना रहेगा।

-प्रधान आर्य समाज फाजिलका

पर्यावरणीय भाषण प्रतियोगिता आयोजित

आज चहुंदिशि ध्वनि, वायु, मृदा, जल, आकाश सभी प्रदूषण की चपेट में आ चुके हैं। यह समस्या केवल राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु विश्व स्तर पर भी गम्भीर से गम्भीरतम रूप धारण कर चुकी हैं। अत: यह अत्यन्त चिन्ता और चिन्तन का विषय है। अभी कुछ दिन पूर्व ही भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने पैरिस में विभिन्न देशों के मध्य सम्पन्न हुई व्यापक पर्यावरणीय सहयोग सन्धि हेतु अपने स्टीक विचार व्यक्त करते हुए समस्त विश्व को अपनी ओर आकृष्ट किया है। वस्तुत: इसकी शुद्धता प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक राष्ट्र का सर्वोच्च धर्म एवं कर्त्तव्य है। इसी बात को लक्ष्य में रखते हुए छात्र/छात्राओं में शुद्ध पर्यावरणीय चेतना लाने हेतु इस भाषण प्रतियोगिता का आयोजन वैदिक शिक्षा परिषद् फाज्लिका द्वारा 11 दिसम्बर, 2015 को आर्य समाज मन्दिर फाजिलका में डॉ० नवदीप जसूजा की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें मुख्यातिथि के रूप में श्री महेन्द्र प्रताप धींगड़ा एडवोकेट तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पूरण चन्द जी जसूजा पधारे। वेद प्रकाश शास्त्री ने बताया कि यह प्रतियोगिता प्राइमरी, मिडिल, मैट्रिक, सैकण्डरी और कॉलेज स्तरीय पांच ग्रुपों में आयोजित की गई।

इस पर्यावरणीय प्रतियोगियों में 4 स्कूलों और ज्योति बी. एड. कालेज के कुल 22 प्रतियोगियों ने अपने विचार व्यक्त किए। समाप्ति पर सभी ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत किया गया। अन्त में अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. नवदीप जसूजा ने कहा कि आज पर्यावंण की शुद्धता अत्यावश्यक है। हमारा स्वास्थ्य तभी शुद्ध रहेगा जब हमें जल, वायु आदि शुद्ध मिलेंगे। मुख्यातिथि श्री महेन्द्र प्रताप धींगड़ा एडवोकेट ने प्रतियोगियों को सम्बोधित करते हुए कहा-आज के छात्र कल के कर्णधार हैं। अत: वे पर्यावरण शुद्ध रखने हेतु वृक्ष लगाएं, वृक्ष बचाएं को अवश्य अपना लक्ष्य बनाएं। विशिष्ट अतिथि श्री पूरन जसूजा ने भी सभी का उत्साहवर्द्धन किया। अन्त में शास्त्री जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का आभार व्यक्त किया। -वेद प्रकाश शास्त्री

वार्षिक चुनाव

29.11.15 को आर्य समाज दीनानगर का वार्षिक चुनाव स्वामी सदानन्द जी महाराज अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री रघुनाथ सिंह शास्त्री को प्रधान चुना गया। जिसका सबने करतल ध्वनि से समर्थन किया, उनको अपनी कमेटी बनाने का अधिकार दिया गया। उन्होंने जो अपनी कार्यकारिणी बनाई वो इस प्रकार है-प्रधान-रघुनाथ सिंह शास्त्री, मन्त्री-रमेश महाजन कोषाध्यक्ष राजेश कुमार, उप प्रधान-मनोरंजन ओहरी, मुनि लाल महाजन, अजमेर सिंह बैंस। प्रचार मन्त्री-ईश्वर भल्ला जी, लेखा निरीक्षक-प्रिंसीपल गन्धर्वराज जी, प्रैस सचिव-रविन्द्र सोढ़ी जी, यज्ञ पुरोहित कैलाश शर्मा।

अन्तरंग सदस्य-धर्मेन्द्र गुप्ता, अनिल गुप्ता, वेद प्रकाश ओहरी, मनोहर सैन ओहरी, विश्व इन्दु ओहरी, भारतेन्दु ओहरी, रछपाल सिंह, सरदारी लाल, रणजीत ओहरी। -रमेश महाजन मन्त्री

विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट का वार्षिक महोत्सव एवं विश्व शान्ति महायज्ञ दिनांक 4, 5, 6 दिसम्बर 2015 को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया गया। इस महायज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्र देव शास्त्री जी एवं वक्ता स्वामी ब्रह्मवेश जी महाराज, पटियाला सुन्दर भजनों की प्रस्तुति के लिए अल्का आर्य ग्रेटर-नोएडा से पधारी, आचार्य चन्द्रदेव जी उच्च कोटि के वक्ता व वेदों के मूर्धन्य विद्वान हैं उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी व तर्क व प्रमाणों के द्वारा श्रोतागणों को निहाल कर दिया। सभी श्रोता आचार्य जी के विद्वत्व की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। आचार्य जी ने ईश्वर, यज्ञ, देश भक्ति, न्याय व्यवस्था, कुरीतियां आदि विषयों पर तीनों दिन बृहत एवं शोध युक्त व्याख्यान किया। स्वामी ब्रह्मवेश जी ने भी अपने प्रवचनों से सबको आनन्दित किया। बहन अल्का आर्य जी अपने भजनों व उपदेशों के द्वारा जनता को मन्त्र मुग्ध करती रही। वार्षिक महोत्सव व विश्व शान्ति महायज्ञ का कार्यक्रम बड़ा ही उत्साहवर्द्धक रहा। इस महोत्सव में यज्ञ पर फरीदकोट के गणमान्य व्यक्तियों को यजमान बनाया गया जिसमें श्रीमती उमा ग्रोवर पत्नी श्री सतीश ग्रोवर अध्यक्ष नगर कौंसिल फरीदकोट, श्री अपूर्व देवगन प्रिंसीपल दशमेश पब्लिक सी. सै. स्कूल फरीदकोट, श्री अश्विनी कुमार मोगा, (बॉबी बैग हाउस) उपाध्यक्ष नगर कौंसल फरीदकोट, श्री सुनील कुमार सचदेवा, श्री दीपक शर्मा, श्री सुभाष पाठक बठिण्डा, श्री कुलदीप आर्य फिरोजपुर, श्री संदीप शर्मा, श्री प्रमोद कुमार, श्री अमन शर्मा, श्री पुनीत वर्मा, श्री राजीव शर्मा, श्री राहुल मित्तल आदि यजमान बने। इस कार्यक्रम में स्वामी श्री निवास जी महाराज कोटकपुरा से पधारे उन्होंने अपने उद्बोधन में समाज की बुराईयों पर प्रकाश डाला और कहा कि आज का युवा वर्ग अपनी सभ्यता व संस्कृति को भूलता जा रहा है। आर्य समाज मन्दिर मोगा के श्री सत्यप्रकाश उप्पल जी ने सभी का उत्साहवर्द्धन किया व इस कार्यक्रम के संयोजक पंडित कमलेश कुमार शास्त्री के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि शास्त्री जी अपनी कर्मठता के साथ इस समाज को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं, पंडित दिवाकर भारती जी ने कहा कि आज से चार वर्ष पहले कभी वार्षिक महोत्सव इस समाज में सम्पन्न नहीं होते थे लेकिन आज लोगों का उत्साह व भीड़ को देखकर मन प्रसन्न हो गया। यह सब पंडित कमलेश कुमार शास्त्री की मेहनत है कि आर्य समाज फरीदकोट वेदों के प्रचार प्रसार के लिए अग्रसर है। इस अवसर पर श्री सतीश कुमा शर्मा जी द्वारा गणमान्य व्यक्तियों को सम्मानित किया। लोगों ने सत्संग सुनकर अपने जीवन को धन्य किया। इस वार्षिक महोत्सव में बाहर से आने वाले मेहमानों के लिए ठहरने व भोजन की उचित व्यवस्था की गई थी।

इस विश्व शान्ति महायज्ञ व वार्षिक महोत्सव को सम्पन्न कराने में समाज के सभी लोगों का विशेष सहयोग रहा। विशेष कर मन्त्री श्री सतीश कुमार शर्मा जी का जिनके संचालन में समाज लगातार प्रगति की ओर बढ़ रहा है। शर्मा जी ने सत्संग में आने वाले सभी श्रोतागणों के लिए प्रातः व सायं दोनों समय भोजन की समुचित व्यवस्था की जिसे देखकर विद्वानों ने कहा कि हम प्रचार के लिए सभी जगह जाते हैं लेकिन ऐसी भोजन व्यवस्था जहां संगत के लिए दोनों समय भोजन दिया जाता हो कहीं नहीं देखा। यहां पर यज्ञ व सत्संग का प्रभाव लगातार लोगों पर पड़ रहा है। लोग आर्य विचारों को सुनकर प्रभावित हो रहे हैं। इस अवसर पर श्री ललित बजाज आर्य समाज कोटकपुरा, श्री सत्य प्रकाश उप्पल, श्री पंडित दिवाकर भारती आर्य समाज मोगा, श्री ओमप्रकाश ग्रोवर, पंडित कुणाल किशोर आर्य समाज जीरा, श्री नवीन कुमार हिमाचल प्रदेश व आर्य समाज मानसा से लोगों ने आकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। -सतीश कुमार

आर्य समाज मन्दिर अन्धेरी (प.) मुंबई का वार्षिकोत्सव समारोह मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर अन्धेरी (प.) मुंबई का वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक गुरुवार 24 दिसम्बर से रविवार 27 दिसम्बर 2015 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विश्व शान्ति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए 21 कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया गाया। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिक विद्वान वेद प्रवक्ता आचार्य श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय थे। आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (राजस्थान) की कन्याओं द्वारा वेदपाठ एवं सुप्रसिद्ध सुमधुर गायक श्री विजय आनन्द जी (फिरोजपुर) के भक्ति संगीत का आनन्द सबने प्राप्त किया।

वेदवाणी

प्रभु के रक्षण के निराले ढंग

महीरस्य प्रणीतमः पूर्वीरुत प्रशस्तयः।
नास्य क्षीयन्त ऊतयः।। -ऋ० ६।४५।३

विनय-मैं क्या बतलाऊं प्रभु किन-किन अद्भुत ढंगों से मनुष्य को उन्नत कर रहे हैं। जब मनुष्य रोता और पीटता रहता है, जब उसके अन्दर ऐसे युद्ध चल रहे होते हैं कि उसे विफलता पर विफलता ही मिलती जाती है, पीछे से पता लगता है कि उस समय में, उन्हीं दिनों में उसने अपनी उन्नति का बड़ा रास्ता तय कर लिया होता है। मनुष्य प्रभु की कल्याणमयी घटनाओं को नहीं समझ पाता कि उन घटनाओं से कभी सुदूर भविष्य में उसका कल्याण कैसे सधेगा। प्रभु के उन्नत करने वाले मार्ग इतने महान् और विशाल हैं कि अल्पदृष्टि मनुष्य उन्हें पूर्णता में कभी नहीं देख सकता, अतएव वह कल्याण की ओर जाता हुआ भी घबराता रहता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी प्रकृति-स्वभाव के अनुसार अपने-अपने निराले ढंग से उन्नत व विकसित हो रहा है। जब मनुष्य अपने ही उन्नति मार्ग को नहीं समझ पाता तो उसके लिए दूसरे मनुष्यों का विकास का दावा भरना कितना कठिन साहस है। उस अगम्य लीला वाले प्रभु की जिस 'प्रणीति' से जिस व्यक्ति ने उन्नति पाई होती है वह व्यक्ति उसी रूप में उस प्रभु के गीत गाता फिरता है। इस तरह अनादिकाल से मनुष्य नाना प्रकार से उसकी प्रशस्तियां गाते आ रहे हैं और गाते रहेंगे। मनुष्य उसकी स्तुतियों का कैसे पार पाएं ? भक्त पुरुष तो उस प्रभु की रक्षाओं का-रक्षा के प्रकारों का ही अन्त नहीं देखता। प्रभु की रक्षण-शक्ति कभी क्षीण नहीं होती। वहां से रक्षणों का एक ऐसा सनातन प्रवाह बह रहा है कि वह सब मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतंगों की, सब स्थावर और अस्थावर जगत् की, एक ही समय में अकल्पनीय प्रकारों से रक्षा कर रहा है। मनुष्य अपने पिछले कुछ अनुभवों के आधार पर सोचता है कि ऐसा होने से मेरी रक्षा हो जाएगी, अतः वह वैसा ही होने की प्रभु से प्रार्थना करता है और वैसी ही आशा करता है, परन्तु इस बार प्रभु एक बिल्कुल नए मार्ग से रक्षा करके मनुष्य को आश्चर्यचकित कर देते हैं एवं नए से नए अकल्पनीय ढंगों से मनुष्य को प्रभु का रक्षण मिलता जाता है, तब पता लगता है कि प्रभु संसार का सब प्रकार से कल्याण ही कर रहे हैं। हम मानें या न मानें, पर वे तो हमें मारते हुए भी हमारी रक्षा कर रहे हैं। अहो, देखो उस प्रभु के उन्नति मार्ग महान् हैं, उसकी रक्षा के प्रकार अनन्त हैं, जानने वाला सब संसार उसकी स्तुतियां ही स्तुतियां गाता है।

-वैदिक विनय से साभार

पं. राम प्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में अमर शहीद बलिदानी पं.राम प्रसाद बिस्मिल का शहीदी दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ सम्पन्न करवाया गया जिसके मुख्य यजमान पंकज धीर एवं नेहा धीर सपरिवार थे। पं.शिवा शास्त्री जी ने पवित्र वेद मंत्रों के माध्यम से यज्ञ सम्पन्न करवाया। इसके पश्चात आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने प्रभु भक्ति के भजन सुनाए। जिनको बहुत पसन्द किया गया। इसके पश्चात अश्विनी डोगरा जी ने शहीद राम प्रसाद बिस्लिम जी के बारे में बताते हुये कहा कि वह एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे जिन्होंने देश को आजाद करवाने के लिये अपने प्राणों की चिन्ता नहीं की। इसके पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री रणजीत आर्य जी ने बताया कि हंसते हंसते फांसी पर चढ़ जाने वाले क्रान्तिकारियों में पं. राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खान एवं ठाकुर रोशन सिंह को 19 दिसम्बर 1927 को शहीद हो गये। आर्य जी ने सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में, देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ए आसमां, हम अभी से क्या बताएं बिस्मिले दिल में है। कविता सुना कर सब के दिल में जोश भर दिया। इस अवसर पर भूपेन्द्र उपाध्याय, चौ. हरिचन्द्र जी, कुबेर शर्मा जी, हर्ष लखनपाल जी, चन्द्रमोहन धीर जी, गंगा तिवारी, तिलक राज, ओम प्रकाश मेहता, नरेन्द्र कुमार,ज्योति सिंह, अमित सिंह, पवन शुक्ला, मोहनी धीर, अनिल डोगरा, विनोद कुमार तिवारी, गौर आर्य, नंदनी शर्मा, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा, ललित धीर, स्नेह कालिया, संगीता तिवारी, संगीता मल्होत्रा, मनु आर्या, दिव्या आर्या, इन्दु आर्या, रानी, सुनील मिश्रा, सुदर्शन आर्य, गौरव आर्य, सुभाष आर्य, स्नेहलता कालिया, ललित कालिया, उमा देवी शुक्ला, मनु आर्या, सुभाष मेहता, सुनील मल्होत्रा एवं समस्त आर्य सज्जन पधारे हुये थे।

-रणजीत आर्य

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।